International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED), ISSN: 2320-8708
Vol. 2 Issue 5, Sept.-Oct., 2014, pp: (63-65), Impact Factor: 1.267, Available online at: www.erpublications.com

दिल्ली सल्तनत के दौरान भारत की सामाजिक एवं आर्थिक संरचना

हरि निवास

परिचय

सल्तनत काल में भारत में एक नई प्रशासनिक व्यवस्था की शुरुआत हुई, जो मुख्य रूप से अरबी-फ़ारसी पद्धति पर आधारित थी। सल्तनत काल में प्रशासनिक व्यवस्था पूर्ण रूप से इस्लाम धर्म पर आधारित थी। प्रशासन में उलेमाओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती थी। 'ख़लीफ़ा' इस्लामिक संसार का पैगम्बर के बाद का सर्वोच्च नेता होता था। प्रत्येक सुल्तान के लिए आवश्यक होता था कि, ख़लीफ़ा उसे मान्यता दे, फिर भी दिल्ली सल्तनत के तुर्क सुल्तानों ने ख़लीफ़ा को नाममात्र का ही प्रधान माना। इल्तुतमिश दिल्ली सल्तनत का पहला सुल्तान था, जिसने 1229 ई में बग़दाद के ख़लीफ़ा को 'नाइब' (सहायक) कहा। अलाउद्दीन ख़िलजी ने अपने को ख़लीफ़ा का नाइब नहीं माना। क़ुतुबुद्दीन मुबारक़ ख़िलजी पहला ऐसा सुल्तान था, जिसने ख़िलाफ़त के मिथक को तोड़कर स्वयं को ख़लीफ़ा घोषित किया। मुहम्मद तुग़लक़ ने अपने शासक काल के प्रारम्भ में ख़लीफ़ा को मान्यता नहीं दी, किन्तु शासन के अन्तिम चरण में उसने ख़लीफ़ा को मान्यता प्रदान कर दी। फ़िरोज़शाह तुग़लक़ ने अपने सिक्कों पर ख़लीफ़ा का नाम उत्कीर्ण करवाया था।

सुल्तान की उपाधि तुर्की शासकों द्वारा प्रारम्भ की गयी। महमूद ग़ज़नवी ऐसा पहला शासक था, जिसने सुल्तान की उपाधि धारण की। दिल्ली में अधिकांश ने अपने को ख़लीफ़ा का नायक पुकारा, परन्तु क़ुतुबुद्दीन मुबारक ख़िलजी ने स्वयं को ख़लीफ़ा घोषित किया। ख़िज़्र ख़ाँ ने तैमूर के पुत्र शाहरुख का प्रभुत्व स्वीकार किया और 'रैय्यत-ए-आला' की उपधि धारण की। उसके पुत्र और उत्तराधिकारी मुबारक शाह ने इस प्रथा को समाप्त कर दिया और शाह सुल्तान की उपाधि ग्रहण की। सुल्तान केन्द्रीय प्रशासन का मुखिया होता था। सल्तनत काल में उत्तराधिकार का कोई निश्चत नियम नहीं था, किन्तु सुल्तान को यह अधिकार होता था कि, वह अपने बच्चों में किसी एक को भी अपना उत्तराधिकारी चुन सकता था। सुल्तान द्वारा चुना गया उत्तराधिकारी यदि अयोग्य है तो, ऐसी स्थिति में सरदार नये सुल्तान का चुनाव करते थे। कभी-कभी शक्ति के प्रयोग से सिंहासन पर अधिकारी किया जाता था। दिल्ली सल्तनत में सुल्तान पूर्ण रूप से निरंकुश होता था। उसकी सम्पूर्ण शक्ति सैनिक बल पर निर्भर करती थी। सुल्तान सेना का सर्वोच्च सेनापति एवं न्यायालय का सर्वोच्च न्यायाधीश होता था। सुल्तान 'शरीयत' के अधीन ही कार्य करता था।

भिन्न-भिन्न वंशों का अधिकार

दिल्ली सल्तनत की स्थापना भारतीय इतिहास में युगान्तकारी घटना है। शासन का यह नवीन स्वरूप भारत की पूर्ववर्ती राजव्यवस्थाओं से भिन्न था। इस काल के शासक एवं उनकी प्रशासनिक व्यवस्था एक ऐसे धर्म पर आधारित थी, जो कि साधारण धर्म से भिन्न था। शासकों द्वारा सत्ता के अभूतपूर्व केन्द्रीकरण और कृषक वर्ग के शोषण का भारतीय इतिहास में कोई उदाहरण नहीं मिलता है। दिल्ली सल्तनत का काल 1206 ई. से प्रारम्भ होकर 1562 ई. तक रहा। 320 वर्षों के इस लम्बे काल में भारत में मुस्लिमों का शासन व्याप्त रहा। यह काल स्थापत्य एवं वास्तुकला के लिये भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

दिल्ली सल्तनत पर निम्नलिखित 5 वंशों का शासन रहा-

ग़ुलाम वंश (1206 से 1290 ई.)

ख़िलजी वंश (1290 से 1320 ई.)

तुग़लक़ वंश (1320 से 1414 ई.)

सैय्यद वंश (1414 से 1451 ई.)

लोदी वंश (1451 से 1526 ई.)

सामाजिक संरचना

दिल्ली सल्तनत के दौरान,इस काल का समाज संक्रमण के चरण में था. समाज का बिभाजन पूरी तरह से धर्म पर आधरित था. लोग हिन्दू और मुस्लिम समुदाय में बिभाजित थे. मुस्लिम वर्ग पुनः अमीर और सरदार वर्ग में बिभाजित था. अमीर लोग भी तीन वर्ग में बिभाजित थे: खान, अमीर, और मलिक. जमींदार भी प्रमुख रूप में दिल्ली सल्तनत में शामिल थे. वे मुख्य रूप से प्रशासनिक संवर्ग में शामिल थे.

दिल्ली सल्तनत के इतिहास में जब अमीरों नें अपनी सत्ता खोनी प्रारंभ की तो सत्ता के केंद्र के रूप में मुस्लिम समुदाय आगे आया. ये अमीर, असरफ के नाम से जाने जाते थे. असरफों ने समाज के अन्दर प्रमुख स्थान प्राप्त किया था. इसीलिए सामाजिक संरचना के अन्दर उन्हीं प्रामुख स्थान प्राप्त था. ये अमीर अपनी आर्थिक मजबूती और रईसों की तरह के लिबास और खान-पान की वजह से समाज में अलग स्थान प्राप्त किया था. जो अमीर, योद्धा वर्ग में शामिल किये जाते थे उनके द्वारा धीरे-धीरे एक सांस्कृतिक संरचना का निर्माण किया गया. इस समय के इतिहास में तुर्की शासकों और राजपूत शासकों के मध्य राजनीतिक संबध आम बने रहे.

काज़ी और मुइजी वर्ग न्यायिक संरचना में प्रमुख स्थान प्राप्त किये हुए थे. वे इन अमीरों की भी मदद किया करते थे. सल्तनत में मुहत्सिब वर्ग के द्वारा आम मुस्लिम वर्ग के द्वारा शरिया के पालन के तौर-तरीकों का मूल्याङ्कन किया जाता था. ये सभी पद वेतनपरक थे. सल्तनत में काफी संख्या में क्लर्क, छोटे-छोटे अधिकारी और दास समुदाय मौजूद था.

हिंदुओं के समाज की संरचना में कोई प्रतिष्ठित बदलाव नहीं किया गया था. दिल्ली सल्तनत के दौरान, पर्दा प्रणाली का व्यापक प्रचालन हो गया था. उच्च वर्गों में, महिलाओं को पर्दा प्रथा के माध्यम से छिपाया जाता था, लेकिन छोटे वर्गों में महिलाएं काफी स्वतंत्र जीवन का यापन करती थी. इस समय सती प्रथा और विधवा विवाह प्रतिबंधित थे. इस काल में एक अच्छी चीज यह थी कि विधवाओं को उनके पति की संपत्ति में अधिकार दिया जाता था.

मुस्लिम समाज आर्थिक असमानता के आधार पर जातीय और नस्लीय समूह में विभाजित किया गया था. तुर्क, ईरानी, अफगान और भारतीय मुसलमानों के बीच शायद ही कोई वैवाहिक सम्बन्ध इस दौरान कायम थे. समाज में जो लोग हिन्दू से मुसलमान बने थे उन्हें न केवल निचली वरीयता दी जाती थी बल्कि उनकी रैंक भी निम्न थी. हिंदु वर्ग के द्वारा प्रशासन की पूरी स्थानीय व्यवस्था को संभाला जाता था. फिर भी दोनों हिंदू और मुस्लिम समुदायों के बीच अतिव्यापन की स्थिति थी. फिर भी दोनों के मध्य सामाजिक और सांस्कृतिक विचारों और विश्वासों में मतभेद विद्यमान थे. इसी वजह से दोनों के मध्य तनाव का माहौल था और उनके मध्य आपसी समझ और सांस्कृतिक समायोजन की कमी भी विद्यमान थी.

आर्थिक संरचना

दिल्ली सल्तनत के दौरान व्यापार में काफी वृद्धि हुई थी. इस समय मुद्रा प्रणाली लागू थी. मुद्रा के रूप में चांदी का टंका प्रचालन में था. सड़कें भी अच्छी स्थिति में थीं जोकि बंगाल के सोनारगाव को दिल्ली, लाहौर, से जोड़ती थीं. संचार प्रणाली भी प्रमुख रूप में मौजूद थी. अर्थात पोस्ट को ले जाने और ले आने के लिए घुड़सवार मौजूद थे.

दिल्ली, लाहौर, मुल्तान, और लखनौती व्यापर के प्रमुख केंद्र थे. इन जगहों पर नए-नए उद्योग मौजूद थे. जैसे- धातु का काम, कागज बनाने, और वस्त्र के रूप में नए उद्योगों का केंद्र. वस्त्र व्यापार चीन और पश्चिम एशिया, के साथ किया जाता था जहाँ पर घोड़े और हाथी दांत, एवं मसालों को वस्त्रों के स्थान पर दिया जाता था. व्यापार वस्तुतः अरब, व्यापारियों के द्वारा पूरी तरह से हस्तगित किया गया था लेकिन तमिलो, कलिंगों और गुजरातियों की भी व्यापार में सहभागिता थी.

सल्तनत में अधिकांश लोगों की जीविका का प्रमुख माध्यम मजदूरी थी. कुछ जमींदार समृद्ध थे जिनमें हिंदु के साथ-साथ मुसलमान जमींदार भी शामिल था. सुल्तान और उनके अमीर एक भव्य महल में जीवन-यापन करते थे. कारीगर और दुकानदार मध्यम वर्ग में शामिल थे. इस काल में गुलामी प्रथा भी उपस्थित थी.

राज्य की आय का मुख्य स्रोत खराज़ था जोकि भू-राजस्व के रूप में लिया जाता था. गैर-मुसलमानों से भी इस काल में कर वसूला जाता था जिसे जजिया कहते थे. अलाउद्दीन खिलजी ने दिल्ली सल्तनत के इतिहास में पहली बार कर की राशि में पूर्व के 1/6 से बढाकर 1/2 कर दिया था. जबकि पूरे सल्तनत काल में किसानों से उनकी पैदावार का 1/3 भाग लिया जाता था. ज़ज़िया हर हिन्दू पर लगाया जाने वाला कर था. इसी तरह ज़कात नामक एक कर भी लिया जाता था. यह कर वस्तुतः गरीब मुसलमान भाइयों की मदद के लिए अमीर मुसलमानों से लिया जाता था. खुम्स लूट का धन होता था. इस धन का 1/5 राजकोष में तथा 4/5 भाग सैनिकों में बाँट दिया जाता था, लेकिन अलाउद्दीन ख़िलजी एवं मुहम्मद तुगलक़ लूट के धन का 4/5 भाग राजकोष में जमा करवाते थे तथा शेष 1/5 भाग सैनिकों में वितरित कर दिया जाता था.

निष्कर्ष

सल्तनत काल में भारत आर्थिक दृष्टि से विकसित था। विदेशों से वस्तुएँ मँगाई एवं भेजी जाती थीं। व्यापार जल एवं स्थल दोनों मार्गों से होता था। इस समय भारत से विदेशों में भेजी जाने वाली महत्त्वपूर्ण वस्तुएँ लोहा, हथियार, अनाज, सूतीवस्त्र, जड़ी-बूटी, मसाले, फल, शक्कर एवं नील आदि थीं। बाहर से आयात की जाने वाली महत्त्वपूर्ण वस्तुओं में घोड़े (अरब, तुर्किस्तान, रूस, ईरानी), अस्त्र-शास्त्र, दास, मेवे फल आदि शामिल थे।

सल्तनत काल के महत्त्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र के रूप में दिल्ली, थट्टा, देवल, सरसुती, अन्हिलवाड़, सतगाँव, सोनार गांव, आगरा, वाराणसी, लाहौर आदि प्रसिद्ध थे। देवल सल्तनत काल में अन्तर्राष्ट्रीय बन्दगाह के रूप में प्रसिद्ध था। सरसुती अच्छे क़िस्म के चावल के लिए, अन्हिलवाड़ व्यापारियों के तीर्थस्थल में रूप में सतगांव रेशमी रजाइयों के लिए, आगरा नील उत्पादन के लिए, एवं बनारस सोने, चाँदी एवं जरी के काम के लिए प्रसिद्ध था। आवागमन के साधन के रूप में बैलगाड़ी, खच्चर, ऊंट, रथ तथा नौकाओं का प्रयोग किया जाता था।

संदर्भ सूची

[1]. http://hi.wikipedia.org/wiki
[2]. http://hi.bharatdiscovery.org/
[3]. http://www.jagranjosh.com/general-knowledge/
[4]. http://hi.brajdiscovery.org/